International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(4): 53-54

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(4): 53-54
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 15-04-2015
Accepted: 10-05-2015

**डॉ. जयप्रकाश द्विवेदी**
व्याख्याता–सामवेद श्रीमती
लाडदेवीशर्मापंचोली संस्कृत महाविद्यालय
बरुन्दनी जिला – भीलवाड़ा (राजस्थान)

# वेद– अपौरूषेयत्व सिद्धिः का एक विचार

## डॉ. जयप्रकाश द्विवेदी

जिस पुरूष विशेष द्वारा वेदों के एवं वेद से समस्त जगत की यज्ञिकविधि द्वारा उत्पत्ति हुई उन वेदो के पौरूषेयत्वापौरूषेयत्व सिद्धि का विचार प्रस्तुत किया जा रहा है। वेद का अपौरूषेयत्व सिद्धि विचार के दृष्टिकोण में यह विचार शब्दार्थ व्यापकता के दृष्टिकोण से अपौरूषेयत्व सिद्ध हो रहा है, जो की अभी तक के विद्वानों के सिद्धविचारों से यह अत्यन्त ही भिन्न है, इसको शास्त्रीय–प्रमाणों के आधार पर ही सिद्ध किया जा रहा है।
पढने में यह विचार एक तरह से अटपटा ही लगता है। परन्तु शास्त्र–प्रमाणों से तथा शब्दार्थ के सूक्ष्म दृष्टिकोण से यह विषय विचारणीय ही दिखता है।

**वेद अपौरूषेय** है यह विषय जब हमारे मानसपटल पर आता है तब हम यही समझते है कि इस वेद को कोई मानवादिपुरूष रचना नहीं किया है, यह तो कोई ब्रह्म, विष्णु, रूद्रादि देवताओं द्वारा ही विरचित किया गया है। परन्तु अतिविचारणीय यह विषय है कि शास्त्रों में इन देवताओं को भी **पुरूष** शब्द से ही इगिंत किया गया है, तथा वह आदिपुरूष ( परमात्मा ) वेदों के यदि रचनाकार है तो **क्या वेद पौरूषेय है?** अर्थात् परमात्मपुरूष द्वारा ही विरचित है क्या? प्रस्तुत लेख में **मानवादि पुरूष** एवं **देवता ( परमात्मपुरूष )** दोनों में भेद दर्शाते हुए तथा देवों को पुरूष कहते हुए भी ऋग्वेदादि विषय को अपौरूषेत्व सिद्धि की गई है जो कि यह मेरा आत्म विचार है, यह विचार कितना सत्य–प्रामाणित है। इसका सूक्ष्मविचार अपने ज्ञान से आप पाठकगण ही निर्णय करेंगे।

**परमात्मपुरूष एवं मानवादिपुरूष की व्याख्या –**
निरूक्तकार यास्क के मतानुसार पुरूष का निर्वचन निम्न प्रकार है :–

**पुरूषः पुरिषादः पुरिशयः पूरयतेर्वा ( निरू. 2–1 )**
**" पूः शरीरं बुद्धिर्वा–तयोरसौ सीदति पुरूषादः। तयोरसौ शेते इति पुरिषयः।**
**" पुरूषादः पुरिशयश्च सन्नवासौपुरूष उच्यते।**
**" पू"** अर्थात् शरीर या बुद्धि में विषयोपलब्धि के लिए रहता है या सोता है वही **पुरिषाद या पुरिशय** कहलाता है। इसी प्रकार **पुर** अर्थात् ग्राम में जो शयन–निवास करता है वह पुरिशय–पुरिषाद अर्थात् ग्राम में सोनेवाला या खानेवाला जो हो वह **मानवपुरूष** कहलाता है। इस पुरिशय–पुरिषाद शब्द के अपभ्रंश रूप बाद में " पुरूष " कहा जाने लगा है।
शब्दार्थव्यापकता के कारण इस पुरूष शब्द को निरूक्तशास्त्र में यास्काचार्य ( परमात्मपुरूष ) अर्थ में निर्वचन कर रहे है।

**पूरयति अन्तः (निरू. 2–1) इति अन्तः पुरूषमभिप्रेत्य (अन्तःजगतः यो पूरयति–पूर्णेकरोति स " पुरूषः"**
इस प्रकार अन्तःकरण ( शरीरजगत ) के निवास अर्थ में यह ऋचा उदाहरण दे रहे है।

**यस्मात्परं नावरमस्ति किंचित्**
**यस्मान्नाणीयो न ज्यायोति किंचित्।**
**वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येके**
**स्तेनेदं पूर्ण पुरूषेण सर्वम्। ( कृ.यजु.आरण्यक)**

अर्थ :– जिस परमात्मपुरूष से पर–अवर अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड का स्थान व्याप्त है तथा कुछ भी जानने योग्य बाते बची नहीं है, समस्त ब्रह्माण्ड के भूत वर्तमान–भविष्य बातें जानते हैं। ऐसे परमात्मपुरूष प्रत्येक शरीरों म, पदार्थो में, एवं समस्त विषयों में ज्ञानरूपी वृक्ष की तरह खड़े है।

**Correspondence**
**डॉ. जयप्रकाश द्विवेदी**
व्याख्याता–सामवेद श्रीमती
लाडदेवीशर्मापंचोली संस्कृत महाविद्यालय
बरुन्दनी जिला – भीलवाड़ा (राजस्थान)

वह एक ही पुरुष रूप में सभी को पूर्ण कर रहे हैं। वह अकेले ही समस्त ब्रह्माण्ड का पालन–पोषण भी कर रहे हैं।

**''पुरूष ''** शब्द से सामान्य अर्थ में मानवादि ( पुरूष ) लेने पर वेद अपौरूषेय माना जाता है, अर्थात् वेदों के रचियता हम देवता ( परमात्मपुरुष) को मानते है। परन्तु वेदों में वर्णित पुरूषवाची विशेष सूक्तों के आधार पर ब्रह्म, विष्णु, रूद्र, आदि परमात्मपुरूष भी इसी शब्द से ही सम्बोधित किए गए है। जिसका प्रमाण पुरूषसूक्त, नारायणसूक्त, रूद्रसूक्त इत्यादि वेदों के अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है।

( 1 ) सहस्रशीर्षा पुरूषः..... ( शु. य. संहिता 23/1 )

( 2 ) पुरूषएवेदं सर्वम्..... ( शु. य. संहिता 23/2 )

**( 3 ) यामिषुं..... पुरूषंजगत्** ( शु. य. संहिता 16/3 )

तथा श्रीमद्भगवत्गीता में भी परमात्मा–परबह्म को **आदिपुरूष** कहा गया है। **(4) त्वमादिदेवः पुरूषःपुराण.....( श्रीमद्भगवत्गीता 11/38 )**

इस प्रकार परमात्मदेवों को भी पुरूष ( शरीर में शयनव्याप्तार्थ ) मानेंगे तथा इस परमात्मपुरूष को वेदों के रचयिता समझेंगे तो वेद पौरूषेय कही जानी चाहिए क्योंकि हम सब परमात्मपुरूष से ही वेदों की प्राप्ति मानते है। उपर्युक्त निरूक्त के निर्वचन आधार एवं कृष्णयजुर्वेद आरण्यकमन्त्र के आधार पर पुरूष शब्दः परमात्मार्थ ही है।

पुनः दूसरे विचार से मंन्त्रों के विनियोग में अनेक स्थानों पर ब्रह्मऋषिः, परमेष्ठी, प्रजापतिऋषिः, रूद्रऋषिः, विष्णुर्ऋषिः इत्यादि वाक्य मिलते है इससे स्पष्ट होता है कि ब्रह्म, विष्णु, रूद्र इत्यादि समस्त देव ऋषि ही हैं, अर्थात् ये सभी मंत्र द्रष्टा ही है। सामवेद गानसंहिता में रौद्रमगान के द्रष्टा स्वयं रूद्र ( शिव ) है।

रौद्रमगानम्–आवोराजा नमध्वरस्य( सा.वे.गा.सं. आग्नेयपर्वे ) विचार करे कि जब ये रूद्र मंत्रों के द्रष्टा हैं तो निश्चित ही ऋषि ही है।

'' ऋषयः मंत्र द्रष्टारः '' एवं आख्याप्रवचनात् इत्यादि जैमिनी न्यायसूत्रों से प्रामाणित होता है कि ये सभी देव एवं ऋषिगण मन्त्रों के प्रवचनकर्त्ता है, न की रचयिता है।

श्वेताश्वतरोपनिषद् में यह वर्णन मिलता है कि '' यो ब्रह्माणं विद्धाति पूर्वम् '' वह परमात्मा सर्वप्रथम वेद को ब्रह्माजी के हृदय में धारण कराये है। तभी तो वेदों के ब्रह्म एवं आदित्यसम्प्रदाय दो प्रमुख सम्प्रदाय माने जाते है।

उपर्युक्त समस्त शंकाओं के समाधान में छान्दोग्योपनिषद् से स्पष्ट होता है कि जिस परमात्मा का वाणी वेद–श्वास स्वतः उत्सर्जित हुआ है, जिसे सायणाचार्य जी ने अपने वेदभाष्यभूमिका में स्वीकार किये हैं।

'' यस्यनिःश्वसितं वेदा यो वेदोभ्योऽखिलंजगत् '' ( सायण वे.भा. भू. ) तथा छान्दोग्योपनिषद् भी स्पष्ट कर रहा है कि '' पुरूषस्य वाग्रसः '', वाच ऋग्रसः '' (छा.उ.1/1) उस परमात्मपुरूष का वाणी अर्थात् वेद–श्वास ही उसका रस ( प्राण ) है, तथा उस वाणी ( वेद–श्वास ) का स्वरूप ऋग्वेदादि विषय है। जिस प्रकार श्वास स्वतः ग्रहीत एवं उत्सर्जित होता है, ठीक उसी प्रकार इस सृष्टि का निर्माण एवं प्रलय होता है।

परमात्मा के श्वास ग्रहण अवस्था में वेद सहित समस्त सृष्टि का प्रलय होकर परमात्मा के अन्तःकरण में विलीन हो जाता है, एवं उत्सर्जन अवस्था में पुनः सृष्टि का निमार्ण हेाता है तथा उसी परमात्मा के श्वास त्याज्य होने पर वेदों की उत्पत्ति स्वतः होती है।

एवं वा अरेऽस्य भूतस्य निश्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाड़िरसः।। ( वह. उ. 2/4/10 )

अन्य विचार भी दर्शाते है :–

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार परमपिता–आदिपुरूष ब्रह्माजी के आयु विचार में यह प्रमाण मिलता है कि

''परं आयुः शतं तस्य तया अहोरात्रयसंख्याया ''

( सूर्य सिद्धान्त मध्यमाधिकार – 21 )

इससे स्पष्ट होता है कि ब्रह्माजी ( परमात्मपुरूष ) की आयु निश्चित होती है। उसके स्थूल शरीर सृष्टि प्रलय के साथ नष्ट हो जाता है। परन्तु उसका सूक्ष्म शरीर ( वेद–वाणी ) शब्दरूप में नित्य रहता है, क्योंकि शब्दब्रह्म कभी भी नष्ट नहीं होता है '' व्याप्तिमत्त्वात् तु शब्दस्य '' ( निरू. 1 अ. ) वह वेद शब्दराशि व्याप्तिमान् रहता है, अतः वेद शब्द राशि नित्य है। इस नित्य राशि का कोई रचयिता या निर्माता नहीं है वह देव, ऋषि या अन्य कोई भी पुरूष हो। वेद तो स्वयंभू, नित्य, अजन्मा, शाश्वत, सर्वशक्तिमान अखिलब्रह्माण्ड का ज्ञान–विज्ञान भण्डार है। अतः रूढ़ीगत पुरूषार्थ में भी वेद अपौरूषेय ही सिद्ध हो रहा है।

**उपसंहार**

स्थूल या सूक्ष्म देहधारी जीवों के बिना प्रयास से जैसे श्वास का ग्रहण–उत्सर्जन क्रिया स्वतः चलती रहती है, ठीक परमात्मा पुरूष के मुख से भी यह वेद राशि स्वतः उत्सर्जित होती रहती है जिसमें परमात्य पुरूष का कोई प्रयास नहीं होता हैं, वह – ज्ञान भण्डार स्वतः नित्य रूप में प्राप्त होता है। अतः परमात्मा पुरूष द्वारा भी यह वेद प्राप्ति नहीं माना जा सकता है। तभी तो यह मानवादि पुरूष एवं परमात्य पुरूष दोनों के लिए अपौरूषेयत्व ही साबित हो रहा है, क्योंकि यह ऋग्वेददि विषय उस परमात्मा का श्वास–वाणी या प्रवचन ही है। एवं वा अरेऽस्य भूतस्य निश्वसितमेतद् यद् ऋग्वेदो यजुवैदः सामवेदोऽयर्वाडिरसः।।

( वह. उ. 2/4/10 )